International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN:2455-2232
Received: 22-10-2025, Accepted: 21-11-2025, Published: 06-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 121-124

जलवायु परिवर्तन का सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रभाव

शिवम
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सांबा, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत

सारांश
वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा औद्योगीकरण का है, जिसने समस्त मानव जाति को भौतिक सुख–सुविधाओं से संपन्न किया है। नवीन तकनीकों की सहायता से मनुष्य ने नित–नए आविष्कार किए, जो उसके विकास–पथ को अग्रसर करते रहे हैं। दुर्गम क्षेत्रों तक पहुँचने के लिए लम्बी–चौड़ी सड़कें बनाना, विद्युत आपूर्ति हेतु नदियों पर बाँधों का निर्माण, पहाड़ियों को काट कर कल–कारखाने लगाना आदि; एक ओर सामाजिक प्रगति को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक विनाश को भी आमंत्रित करता है। जलवायु परिवर्तन आज किसी क्षेत्र या देश की नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की प्रधान समस्या के रूप में उभरा है। इसके फलस्वरूप कभी समय से पहले ही 'बुरांश' और 'सेब' के पौधों पर फूल आ रहे हैं तो कभी राजस्थान जैसे क्षेत्र में बाढ़ और चेरापूंजी में सामान्य से कम मात्रा में वर्षा हो रही है। वैश्विक स्तर पर देखें तो 'ग्लोबल वार्मिंग', ओज़ोन–परत का क्षय होना तथा महासागर के स्तर में लगातार वृद्धि; जलवायु परिवर्तन के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ भी इससे बहुत प्रभावित हुई हैं।
वैसाखी या विशु उत्तर भारत में मनाया जाने वाला त्यौहार है, जिसे वसंत ऋतु के फसल उत्सव के रूप में देखा जाता है। इसके मनाने का उद्देश्य फसल को सफलतापूर्वक प्राप्त करना है, परंतु आजकल ऋतु चक्र में अनियमित परिवर्तन होने के कारण इस समय तक फसल कटाई हेतु तैयार भी नहीं हो पाती। जलवायु परिवर्तन का अन्य उदाहरण चंबा में होने वाले मिंजर मेले से लिया जा सकता है, जिसमें मक्की की बाली (मिंजर) को भगवान रघुनाथ को अर्पित किया जाता है। मौसम में आए बदलाव के कारण उस समय तक कुछ ही स्थानों पर मक्की की फसल में मिंजर विकसित हो पाती है, जबकि अधिकतर स्थानों में मिंजर तब निकलता है, जब मेले को समाप्त हुए कई दिन बीत चुके होते हैं। काफल हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड तथा हिमालयी क्षेत्र में पाया जाने वाला एक औषधीय फल है। कुमाऊँनी संस्कृति में इसका बहुत महत्त्व है। अक्सर वहां के गीतों में इस फल का चौत (अप्रैल) में पक कर तैयार होना दर्शाया गया है, लेकिन असमय ही पकने के कारण हमारी संस्कृति के प्रति संदेह डालते हुए ये उसकी प्रामाणिकता को प्रभावित करता है। जिसका कारण कहीं न–कहीं जलवायु परिवर्तन ही है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी भी क्षेत्र की संस्कृति, परम्पराएँ तथा रीति–रिवाज उस स्थान की जीवंतता का प्रमाण होते हैं। ये मनुष्य के साथ संवेदनात्मक रूप से जुड़ी हैं। अतः पर्यावरण में आए बदलाव से उस स्थान की संवेदनाओं के आहत होने की सम्भावना बढ़ जाती है। जिसे इस शोध–पत्र के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया जाएगा।

मूल शब्दः पर्यावरण, प्रकृति, जलवायु–परिवर्तन, वायुमंडल, मानसून, संस्कृति, मौसम, अतिवृष्टि–अनावृष्टि

भूमिका
प्रकृति–प्रदत्त उपहारों में जलवायु प्रमुख मानी जाती है क्योंकि संसार के किसी भी क्षेत्र की भौगोलिक विविधता को समझने के लिए वहाँ की जलवायु को समझना अति आवश्यक है। जलवायु किसी भी क्षेत्र में लंबे समय तक रहने वाले औसत मौसम के आधार पर निर्धारित की जाती है। जलवायु और मौसम में मुख्य भेद यह है कि "मौसम वायुमंडल की क्षणिक अवस्था है, जबकि जलवायु का तात्पर्य अपेक्षाकृत लंबे समय की मौसमी दशाओं के औसत से होता है। मौसम जल्दी–जल्दी बदलता है, जैसे कि एक दिन में या एक सप्ताह में, परंतु जलवायु में बदलाव 50 अथवा इससे भी अधिक वर्षों में आता है।"[1] प्रत्येक स्थान की जलवायु वहाँ के अक्षांश, देशांतर, भूमि उपयोग तथा आसपास की जल–राशियों से प्रभावित होती हैं। संपूर्ण विश्व का जलवायु–अध्ययन अत्यंत कठिन कार्य है, जिसे ध्यान में रखते हुए कोपेन ने सन् 1918 में समस्त विश्व की जलवायु को A, B, C, D तथा E इन पाँच समूहों में विभाजित किया। इन्हें क्रमशः उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु, शुष्क जलवायु, कोष्ण शीतोष्ण (मध्य अक्षांशीय जलवायु), शीतल हिम–वन जलवायु, शीत जलवायु आदि नामों से संबोधित किया गया है। भारत मुख्य रूप से समूह A के उष्णकटिबंधीय मानसून जलवायु तथा समूह C के आर्द्र उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु नामक उप–समूहों में आता है। भारत के संदर्भ में जलवायु को नियंत्रित करने वाले तत्वों में यहाँ का जलीय एवं स्थलीय वितरण, हिमालय पर्वत, समुद्र तल से दूरी तथा उच्चावच प्रमुख हैं। सामान्यतः जलवायु के अंतर्गत मौसम, मानसून, ऋतुएँ, मानसूनी–पवनों इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। इनके विस्तृत अध्ययन से पता चलता है कि क्यों भारत के कुछ क्षेत्र पूरे साल भर हिमाच्छादित रहते हैं और कुछ क्षेत्र रेगिस्तान में आवृत हैं? क्यों "गर्मियों में पश्चिमी मरुस्थल में तापक्रम कई बार 55° सेल्सियस को स्पर्श कर लेता है। जबकि सर्दियों में लेह के आसपास तापमान –45° सेल्सियस तक गिर जाता है। राजस्थान के 'चुरू' जिले में जून के महीने के किसी एक दिन का तापमान 50° सेल्सियस अथवा इससे अधिक हो जाता है, जबकि उसी दिन अरुणाचल प्रदेश के 'तवांग' जिले में तापमान मुश्किल से 19° सेल्सियस तक पहुँचता है।"[2]
किसी भी क्षेत्र की जलवायु का वहाँ की संस्कृति तथा परंपराओं से गहरा संबंध होता है। इससे समुदाय विशेष की जीवन–शैली, खान–पान, वेशभूषा आदि प्रभावित होती हैं। इसके कारण खान–पान में विविधता आती है, यथा गर्म और शुष्क क्षेत्र के लोग हल्के भोजन का सेवन करते हैं और ठंडे क्षेत्रों में अधिक कैलोरी युक्त भोजन किया जाता है। जलवायु के अनुरूप ही वेशभूषा में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। मैदानी या गर्म स्थानों में हलके, ढीले और सूती वस्त्र पहने जाते हैं, वहीं ठंडे व पहाड़ी प्रदेशों में गर्म, मोटे तथा ऊनी वस्त्रों को धारण किया जाता है। यह हमारी दिनचर्या या जीवनशैली से भी संबंधित है। इसके कारण ही हमारे आवास की संरचना में परिवर्तन आता है। उदाहरण के लिए समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों का जीवनयापन लगभग समुद्र आधारित होता है, जैसे मछली पकड़ना, नाव चलाना इत्यादि। वहीं पर्वतीय स्थानों का जीवन खेती तथा पशुपालन आधारित रहता है। इसकी परिधि प्रत्येक स्थान की आर्थिक

व्यवस्था से पूर्णतया जुड़ी हुई है। भारत के दृष्टिकोण से देखें तो यहाँ के उत्तर तथा पूर्वी क्षेत्र के अतिरिक्त अधिकतर भू–भाग में यथेष्ट गर्मी होती है, जिससे पूरे वर्ष भर खेती करना संभव है। फलस्वरूप देश की लगभग 64 प्रतिशत जनता खेती पर निर्भर करती है। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु विविधता होने के कारण यहाँ अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं।

हिमालय पर्वत भारत में प्रमुख जलवायु–विभाजक की भूमिका को निभाता है। यहाँ की ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ भारतीय उप–महाद्वीप को उत्तरी–ध्रुव से आने वाली ठंडी पवनों से सुरक्षा प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त ये मानसूनी पवनों को भारत में ही रोक कर इस उप–महाद्वीप में वर्षा का कारण बनती हैं। हिमालय एक विशाल संरचना है जो अफगानिस्तान से लेकर म्यांमार तक फैली हुई है। भारत में इसका विस्तार मुख्यतः कश्मीर से लेकर असम तक है। पर्वतीय क्षेत्र होने से यहाँ की जलवायु अपेक्षाकृत ठंडी है, अतः शेष भारत से पृथक वातावरण होने के कारण इसे हिमालयी जलवायु भी कहा जा सकता है। ऊँचाई के आधार पर ये विविध और विषम जलवायु पट्टी है, जिसमें उपोष्ण कटिबंधीय से लेकर शीत जलवायु तक शामिल हैं। यहाँ मुख्यतः वर्षा की दो अवधियाँ होती हैं – शीतकालीन वर्षा तथा ग्रीष्मकालीन वर्षा। शीतकालीन वर्षा का मुख्य कारण पश्चिमी विक्षोभ माना जाता है, जिसके कारण सर्दियों के दौरान भारी बर्फबारी होती है। वहीं दक्षिण–पश्चिम मानसूनी पवनों के कारण दार्जिलिंग जैसे क्षेत्रों में भारी बारिश होती है। हिमालयी क्षेत्र की जलवायु ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में शेष भारत की जलवायु को प्रभावित करती है।

बिहार हिमालय की तलहटी में अवस्थित एक राज्य है। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ बरसात के मौसम में 80 प्रतिशत जनसंख्या बाढ़ से प्रभावित होती है। जलवायु के निरंतर परिवर्तित होने से ही इस क्षेत्र में वर्षा व बाढ़ भयावह रूप धारण करती जा रही है। जिसका प्रभाव बिहार के वैवाहिक अवसरों पर स्पष्टतया देखा जा सकता है। लोग भारी वर्षा के कारण हो रही असुविधा से बचने हेतु नए–नए तरीके अपना रहे हैं– "बिहार में बाढ़ की स्थिति विकराल होती जा रही है। इस बीच मॉनसून में होने वाली शादियों में कुछ लोग दुल्हन के घर तक पुल बनाकर अपनी बारात ले जा रहे हैं और कुछ लोग नांव की मदद ले रहे हैं। जैसे–जैसे बाढ़ और भीषण होती जा रही है, वैसे–वैसे समुदाय परंपराओं को जीवित रखने के लिए जोखिम भरे उपायों का सहारा लेते जा रहे हैं।"[3] हिमालय की तलहटी में प्राचीन समय से ही शहद एकत्रित करने की परंपरा रही है जो गुरुंग संस्कृति का अभिन्न अंग है। गुरुंग एक ऐसा समूह है जो हजारों वर्षों से नेपाल और उत्तर भारत की पहाड़ियों में निवास कर रहा है। वे जान जोखिम में डाल कर मधुमक्खियों के छत्तों से शहद निकालते हैं। बदलती जलवायु के कारण जिस क्षेत्र से पहले 10–15 लीटर शहद प्राप्त होता था, अब वहाँ 200 मिली लीटर से भी कम मात्रा में शहद प्राप्त हो रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार– "नेपाल में हिमालय की विशाल मधुमक्खियां खतरनाक दर से घट रही हैं। क्लिफ कॉलोनी की संख्या और मधुमक्खियों के घोंसलों की कुल संख्या दोनों में कमी देखी गई है। इस मामले में, सांस्कृतिक परंपराओं पर प्रभाव डालने वाला एकमात्र कारक जलवायु परिवर्तन नहीं है। हिमालय की विशाल मधुमक्खी में तेज़ी से गिरावट के लिए कीटनाशकों, आवास और खाद्य स्रोतों की कमी और बुनियादी ढांचे के विकास सहित कई कारकों को जिम्मेदार ठहराया गया है।"[4]

बदलती जलवायु ने उत्तराखंड की भोटिया जनजाति के जीवन को कठोरता से प्रभावित किया है। ये ऐसे लोगों का समूह है जो भारत–तिब्बत सीमा की पर्वत श्रृंखलाओं में निवास करते हैं। ये घुमंतू समुदाय शरद ऋतु में मुनस्यारी के तलहटी शहर में रहते हैं, परंतु ग्रीष्म के आरंभ में ही अपनी जन्मभूमि लौट जाते हैं। जिससे वे अपने खेतों, जमीन और पुश्तैनी घरों से जुड़े रहते हैं। बे–मौसम भारी वर्षा एवं बर्फबारी ने उनकी यात्रा में अनेक चुनौतियाँ पैदा की हैं। साथ ही ग्लेशियर सिकुड़ने और जल–धाराओं के सूखने के कारण अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में उनका जीवनयापन कठिन होता जा रहा है – "खान–पान से लेकर पहनावे तक, आजीविका से लेकर दैनिक दिनचर्या तक, इन परिवर्तनों के की वजह से पारंपरिक भूटिया संस्कृति के कई पहलू लुप्त होते जा रहे हैं। इस इतिहास को संजोने वाली कुछ वस्तुएँ मुनस्यारी में ट्राइबल हेरिटेज म्यूज़ियम में अपना रास्ता तलाश रही हैं, जहाँ उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखा गया है।"[5] इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन का प्रभाव उन समुदायों में भी स्पष्ट नजर आता है, जिनका संस्कृति और आजीविका के साथ अभिन्न संबंध है। नक्षी कांथा, बांग्लादेश में हाथ से की जाने वाली एक ऐसी कारीगरी है, जिसमें आमतौर पर पुरानी साड़ियों का उपयोग होता है। यहाँ की महिलाएँ 500 सालों से अपने भावों को सिलाई के रूप में पेश कर रही हैं। यह हस्तकला कुछ लोगों के लिए अर्थोपार्जन का माध्यम भी है, लेकिन जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से हुए विस्थापन के फलस्वरूप यह कला धीरे–धीरे क्षीण होती जा रही है– "विनाशकारी और लगातार आने वाले बाढ़ बांग्लादेश में कई लोगों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से अलग कर रही है। बाढ़ की वजह से लोगों के पास नदी किनारे अपने घरों को छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है, और इस बीच कई लोग अपनी विरासत को भी पीछे छोड़ देते हैं।"[6]

हिमाचल में मुख्यतः चंबा के गद्दी समुदाय की संस्कृति भी जलवायु में आ रहे बदलावों के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रही है। यह समुदाय भेड़–बकरियों को चराने हेतु निरंतर स्थान परिवर्तित करते रहते हैं। यह अधिकांशतः शरद ऋतु मैदानी इलाकों में बिताते हैं तथा गर्मी के आरंभ में पहाड़ी क्षेत्रों की ओर बढ़ जाते हैं। असमय बारिश और हिमपात के कारण इनका व्यवसाय बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। कई बार अचानक हिम खंड गिरने से इन्हें पशु–धन की हानि हो रही है तो कहीं अनावृष्टि के कारण इनके पशुओं को पर्याप्त चारा नहीं मिल रहा है – "अपने 2021 के शोध पत्र, 'पुराने तरीके और नए मार्ग: भारतीय हिमालय में जलवायु खतरे और अनुकूलन संबंधी संभावनाएं' में, रिचर्ड एक्सेलबी और मौरा बुलघेरोनी ने स्पष्ट रूप से चरवाहा समुदायों पर ध्यान केंद्रित किया है। वे इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि बढ़ते तापमान की वजह से किस तरह से घास के मैदानों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। साथ ही, इसका जानवरों के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है जो उन पर निर्भर हैं। असामान्य रूप से शुष्क मानसून या बेमौसम तूफान इन मिट्टी को या तो सामान्य से अधिक शुष्क बना सकते हैं, या कीचड़ में ढक सकते हैं। पेपर में यह भी लिखा गया है कि गद्दियों को अपने प्रवास के दौरान जोखिमों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि तूफानों के साथ ग्लेशियरों के पिघलने से भूस्खलन की संख्या में वृद्धि हुई है। चरवाहों ने जलवायु प्रभावों के प्रति अलग–अलग तरीकों से प्रतिक्रिया दी है: कुछ ने अपने जानवरों के झुंड में बकरियों का प्रतिशत बढ़ा दिया है, क्योंकि भेड़ों की तुलना में बकरियां हानिकारक पौधों से बेहतर तरीके से बच सकती हैं; कुछ लोगों ने आवश्यक वनस्पति की कम उपलब्धता की भरपाई के लिए शीतकालीन चरागाह क्षेत्रों की संख्या में वृद्धि की है, जहां वे चले जाते हैं।"[7]

जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप अतिवृष्टि ने चंबा की मणिमहेश यात्रा को बुरी तरह से प्रभावित किया। मणिमहेश चंबा के भरमौर उपखंड में स्थित है जो विश्व के पञ्च–केलाश में से एक माना जाता है। यहाँ कृष्ण जन्माष्टमी से राधाष्टमी तक हर साल हजारों की संख्या में श्रद्धालु यात्रा करते हैं। इस वर्ष यहाँ अचानक आई प्राकृतिक आपदा के कारण न सिर्फ जन–धन की भारी हानि हुई अपितु इस स्थान की पवित्र झील डल को तोड़ने

की परंपरा भी प्रभावित हुई। संभवतः यह पहली बार हुआ कि इस यात्रा के समापन पर राधाष्टमी के दिन डल झील तोड़ने की परंपरा को पूरा नहीं किया जा सका। अतः बाद में चंबा के चौगान में इस प्रथा को पूर्ण किया गया – "राधा अष्टमी पर मणिमहेश डल झील में पारंपरिक शाही स्नान संभव नहीं हो पाया और भारी बारिश और लगातार हो रहे भूस्खलन के कारण यह परंपरा 84 मंदिर परिसर में पूरी की गई। प्रशासन ने शाही स्नान के लिए सचुईं से चेलों को गौरीकुंड तक हेलीकॉप्टर से ले जाने की योजना बनाई थी, लेकिन खराब मौसम ने यह प्रयास विफल कर दिया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन को यात्रा समय से पहले रोकनी पड़ी।"[8]

जलवायु में आ रहे फेरबदल से कहीं अत्यधिक वर्षा हो रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है, कहीं भारी भूस्खलन तो कहीं हिमालयी क्षेत्रों में द्रुत गति से पिघलते ग्लेशियर झीलों का रूप ले रहे हैं। ये झीलें वाटर बम का रूप धारण कर इस क्षेत्र में भारी तबाही मचा सकती हैं। केन्द्रीय जल आयोग (CWC) की 2025 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार – "Using high-resolution Sentinel satellite data via Google Earth Engine, the commission monitors 2,843 glacial lakes and water bodies. Among these, 428 glacial lakes within India have expanded. These include 133 in Ladakh, 50 in Jammu and Kashmir, 13 in Himachal Pradesh, seven in Uttarakhand, 44 in Sikkim, and 181 in Arunachal Pradesh."[9] (अर्थात् आयोग ने गूगल अर्थ इंजन के उच्च रिजॉल्यूशन सेंटिनल सेटेलाइट डेटा का उपयोग करते हुए 2,843 झीलों का अवलोकन किया। जिसमें भारत में 428 ग्लेशियर झीलों का विस्तार हुआ है। इसमें लेह–लद्दाख में 133, जम्मू और कश्मीर में 50, हिमाचल में 13, उत्तराखंड में 7, सिक्किम में 44 तथा अरुणाचल प्रदेश में 181 झीलें शामिल हैं।) इस विवरण से हमें यह ज्ञात होता है कि भारत के हिमालयी क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन ने कैसे प्रभावित किया हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से समझा जा सकता है कि संस्कृति किसी भी समाज की जीवंतता का द्योतक है और विविधता में एकता को दर्शाने में सहायक है। वहीं जलवायु हमारे वातावरण को जीवन–योग्य बनाने वाला महत्त्वपूर्ण घटक है। यह कहीं न कहीं हमारी संस्कृति को भी प्रभावित करती है। विगत वर्षों से जलवायु परिवर्तन एक विकराल समस्या के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है। यह किसी क्षेत्र या देश मात्र का संकट न होकर एक वैश्विक समस्या के रूप में उभरा है। आज भारी मात्रा में वनोन्मूलन तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है, जिससे वातावरण में विकृति आ गयी है। इसे संरक्षित–संवर्धित करने हेतु प्रत्येक मनुष्य का सहयोग अपेक्षित है। यदि अब भी पर्यावरण की इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया गया तो भविष्य में इसके विनाशकारी परिणाम देखे जा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. भारत और भौतिक पर्यावरण, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), कक्षा–11जी, पुनर्मुद्रित संस्करण : फरवरी 2025, पृष्ठ– 28
2. वही
3. मॉनसून में होने वाली शादियों में बाधा डाल रही बिहार की बाढ़
4. नेपाल में मधुमक्खियों की आबादी क्यों हो रही है कम?
5. उत्तराखंड के पहाड़ों में लुप्त होती भूटिया संस्कृति की एक झलक
6. बदलते जलवायु के साथ बदल रही है एक पारंपरिक कशीदाकारी कला नक्षी कांथा
7. एक शोध में हिमालय के मज़बूत गद्दी चरवाहा समुदाय पर प्रकाश डाला गया है
8. Manimahesh Yatra: 16 लोगों की मौत, आधी–अधूरी यात्रा और डल में पहली बार सदियों पुरानी परंपरा टूटी...मणिमहेश में कभी नहीं बरपा था कुदरत का ऐसा कहर!
9. Himalayan glacial lakes eÛpand by 9-24% over 14-years: CWC Report